(UGC Care Journal) **ISSN : 0974-0053**

उन्मीलन

Vol. 33, Issue-09 (March, 2022)

(A Multidisciplinary Refereed Research Journal)

प्रधान संपादक

यशदेव शल्य : मुकुन्द लाठ

संपादक

अम्बिकादत्त शर्मा

दर्शन प्रतिष्ठान

जयपुर

अनुक्रमणिका

- **श्री अरविंद दर्शन में नैतिकता : विकास के साधन के रूप में** 1–2

  सीमा चौरसिया

- **हिन्दी सिनेमा में महिला चरित्र की बदलती छवि का ऐतिहासिक सर्वेक्षण** 3–5

  अंकिता पाठक

- **असंगठित क्षेत्र : भारतीय अर्थव्यवस्था का इंजन** 6–14

  विनीत कुमार तिवारी

- **संगीत के संवर्द्धन में दरबारी कलाकारों की भूमिका** 15–20

  रमेश कुमार सिंह

- **स्त्री विमर्श की अवधारणा एवं स्वरूप** 21–28

  डॉ. प्राची सिंह

- **साइबर अपराध का समाज पर प्रभाव** 29–32

  डा. अलका शर्मा

- **भारत में पर्यावरण प्रदूषणः मलिन बस्तियों के विशेष सन्दर्भ में** 33–36

  डॉ0 लक्ष्मीना भारती

- **हर्ष का विदेशी राज्यों से सम्बन्ध : एक अध्ययन** 37–41

  मनीषा

हर्ष का विदेशी राज्यों से सम्बन्ध : एक अध्ययन

मनीषा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर, हरियाणा

हर्ष का विदेशी राज्यों से सम्बन्ध इस विवरण से पुष्टि होता है कि 645 ई0 से 648 ई0 के बीच 6 दूत मण्डल भेजे गए। तीन भारत से और तीन चीन से। पहला दूत मण्डल हर्ष ने भेजा, जिसके सदस्यों के विषय में कोई सूचना उपलब्ध नहीं है। इसके उत्तर में ताई–त्सुगं ने एक प्रतिनिधि मण्डल भेजा। जब ये चीन लौटे तो हर्ष का दूत इनके साथ ही गया। इसी प्रकार दूसरा चीनी दूतमण्डल 643 ई0 में ली–ई0 प्याओं के नेतृत्व में जिसका सहायक वांग शुआन–त्वजे था। ब्राह्मण अतिथि को औपचारिक रूप से उसके देश पहुँचाने आया था। ली–ई–प्याओं का दल राजगृह और गृध्रकूट के मार्ग से लौटा जहाँ प्रचलित प्रथानुसार उन्होंने स्मारक शिलालेख स्थापित किए। यद्यपि यह दल 645 ई0 में चीन वापस गया लेकिन सम्राट ताई त्सुंग के मंचूरिया के साथ युद्ध व्यस्त होने के कारण ली–ई–प्याओं 647 ई0 तक सम्राट के सामने पेश नहीं हो सका। ली–ई–प्याओं के दल के पश्चात हर्ष ने अपना तीसरा दूत मण्डल भेजा। प्रत्युत्तर में चीन का अन्तिम दूत मण्डल चेन क्वान के बाईसवे वर्ष (648 ई0) के चौथे मास में वांग–शुआन–त्जे के नेतृत्व में भेजा गया। इस दल की यात्रा का सबसे विस्तृत विवरण मिलता है। यह वांग–शुआंग–त्जे की दूसरी भारत यात्रा थी। पहली बार वह ली–ई–प्याओं के सहायक के रूप में आया था। दूसरी बार की यात्रा में प्रमुख भूमिका में था और उसे स्वयं के लिए एक सहायक प्राप्त था। जिसका नाम चिपांग–शि–त्जन था। इस दल को भारत पहुँचने पर हर्ष की मृत्यु तथा उसके कारण उत्पन्न अव्यवस्था का समाचार मिला।

चियु–तांग–शुं आदि के अनुसार हर्ष सम्राट के पास अपना पहला दूत मण्डल ''नजर भेट करने के लिए'' तथा शिन तांग–शु के अनुसार 'पत्र प्रस्तुत करने के लिए' भेजा था। दूसरी ओर ताई–त्सुंग के दूत मण्डल का उद्देश्य 'चियु–तांग–शु के शब्दों में तांग सम्राट का हर्ष के प्रति कृपा पूर्ण हित चिन्तन का प्रदर्शन था।

हर्ष के दूसरे दूतमण्डल का उद्देश्य भी चियु–तांग–शु के शब्दों में नजर भेंट करना था। तथा शिन–तांग–शु के अनुसार चीनी दूत मण्डल को वापसी में चीनी दरबार तक साथ देना था। इन दोनों ही तृत्तान्तों के अनुसार ताई–त्सुंग का दूसरा दूत मण्डल हर्ष के दूत मण्डल के प्रत्युत्तर में था। चियु–ताग के अनुसार हर्ष के अन्तिम दूत मण्डल का उद्देश्य, अग्निमोती, धूप तथा बोधिवृक्ष की शाखाएँ भेट रूप में प्रस्तुत करना और शिन–तांग–शु के अनुसार ये वस्तुएँ नजराने के रूप में भेजना था। वांग–शुआन–त्जे को इस दूत मण्डल के प्रत्युत्तर में पश्चिमी देशों में दूत बनाकर भेजा गया।

अन्य देशों की तुलना में चीन यात्रियों के विवरणों में चीन को श्रेष्ठ दिखाने की प्रवृत्ति झलकती है। बौद्ध भिक्षु ई–चिंग ने, अपने वृत्तान्त में भारतीय औषधि विज्ञान की प्रशंसा की है, यद्यपि चीनी सम्राट दीर्घायु–विज्ञान में दक्ष भारतीयों को सदैव आग्रहपूर्वक आमंत्रित करते थे फिर भी ई–चिंग लिखता है कि ''आयु बढ़ाने की औषधि केवल चीन में मिलती है।'' परन्तु जहाँ तक भारत और चीन के दूत मण्डलों का सम्बन्ध है, दोनों ओर के प्रतिनिधियों का प्रेमपूर्ण स्वागत होता था, यद्यपि चीनी ग्रन्थों में भारत में हुई आवाभगत का अधिक विस्तृत वृत्तान्त मिलता है। भारत में विदेशी अतिथियों का स्वागत एक उत्सव के रूप में किया जाता था। राजमार्ग सजाए जाते थे, धूप जलाई जाती थी और प्रजा उनको देखने उमड़ पड़ती थी। राजा तथा मन्त्रिमण्डल आडम्बरपूर्ण दूतों का स्वागत करते थे। दूतों के प्रत्यय–पत्र उनके द्वारा लाये गये उपहार और सन्देश शिष्टाचारपूर्वक स्वीकार किये जाते थे। चीनी सम्राट द्वारा भी भारतीय दूतों का स्वागत किये जाने एवं उनको राजकीय प्रासादों या सर्वोत्तम सरकारी आवासों में ठहराए जाने के उल्लेख मिलते है।

देवहूति द्वारा अनुसूचित स्त्रोतों के अनुसार चीनी सम्राट ताई त्सुंग के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में पहला, कदम हर्ष ने उठाया था। इनके अनुसार 641 ई0 में 'मगधराज' उपाधि धारण करने के बाद हर्ष ने अपना दूत चीन भेजा था। किन्तु शुआन–च्वांग के यात्रा–विवरण, जीवनी और भारतीय वृत्तान्तों में 641 ई0 में हर्ष के जीवन में मगध से सम्बन्धित

किसी विशेष घटना का संकेत नहीं मिलता। देवहूति का मत है कि 641 ई0 में हर्ष ने अपने दूत के साथ जो राजकीय पत्र चीन भेजे उनमें अपने लिए 'मगधराज' उपाधि का प्रयोग किया होगा। इस तथ्य की चीनी स्त्रोतो में इस प्रकार चर्चा की गयी है कि मानों उस वर्ष हर्ष के द्वारा एक नवीन उपाधि के धारण करने जैसी उल्लेखनीय घटना घटी थी। मौर्य काल के साथ मगध सर्वोच्च सत्ता के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था, सम्भवतः इसी कारण हर्ष ने विदेशी पत्र–व्यवहार में अपने को कन्नौजपति न कहकर मगध–राज कहना श्रेयस्कर समझा होगा।

अधिंकांश विद्वान यह मानते आये है कि शुआन–च्वांग से हुई भेट से प्रेरित होकर हर्ष ने अपना प्रथम दूतमण्डल चीन भेजा था।[3] इसका आधार 'शिन तांग शु' में प्रदत्त घटना क्रम है जो इस प्रकार है– सबसे पहले 618–27 ई0 के बीच हर्ष के द्वारा की गई विजयों का उल्लेख है इसके बाद शुआन–च्वांग के उसके राज्य में आने की चर्चा है परन्तु इस आगमन की तिथि नहीं दी गयी है।[4] तत्पश्चात् शीलादित्य द्वारा शुआन–च्वांग को निमन्त्रण दिया जाता है और उनके सम्वाद के दौरान चीनी यात्री से ताई त्सुंग की प्रशंसा सुनने पर हर्ष चीनी सम्राट के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने की इच्छा प्रकट करता है। इस क्रम में यह मान लेना स्वाभाविक है कि शुआन–च्वांग के साथ हुई भेट के परिणामस्वरूप हर्ष ने अपना दूत मण्डल चीन भेजा था।

परन्तु एक ओर हमें इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि हर्ष ने अपना दूतमण्डल 641 ई0 में भेजा था और दूसरी ओर 'जीवनी' और शुआन–च्वांग की यात्रा विवरण के अनुसार हर्ष और चीनी यात्री की भेट 642 ई0 के अन्त या 643 ई0 के प्रारम्भ में हुई थी।[5] 'जीवनी' का भी यह स्पष्ट कथन है कि शुआन–च्वांग 645 ई0 के बसन्त में चीनी राजधानी पहुंचा था। छठे पंचवर्षीय सम्मेलन में वह हर्ष के साथ प्रयाग में था। प्रयाग से भारत की उत्तर–पश्चिमी सीमा तक और फिर खोतान होते हुए चीन तक की वापसी यात्रा में 643 ई0 से 645 ई0 तक का समय लगना उचित जान पड़ता है। इसलिए हर्ष ने अपना प्रथम दूत मण्डल शुआन–च्वांग से हुई भेट से पूर्व ही चीन भेज दिया होगा।

जब हर्ष ने चीन के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किए उसकी शक्ति चरमोत्कर्ष पर थी। उसका प्रभाव उत्तरी भारत के अधिकांश भागों पर था। देवहूति के अनुसार अपने साम्राज्य की विशालता, समृद्धि तथा सुदृढ़ता से उत्पन्न आत्मविश्वास राजनीतिक महत्वाकांक्षा तथा बौद्धिक जागरूकता ही चीन के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने में हर्ष की प्रेरणा के स्त्रोत थे।[6] भारत और बौद्ध धर्म में चीन की दिलचस्पी ने भी, जिसका प्रमाण चीनी बौद्ध भिक्षुओं और विद्वानों की भारत यात्राएँ है, दोनों पक्षों के सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने में योगदान दिया। भारत की ओर से दूसरा दूतमण्डल के साथ अग्नि, मोती और धूप भेजे गये। कामरूप के शासक ने भी अनेक उपहार दियें, अपने देश का एक मानचित्र भेजा और लाओ–त्जे का चित्र (मूर्ति) पाने का अनुरोध किया। इसके पहले ली–ई–प्याओ और वांग शुआन–त्जे के नेतृत्व में आने वाले दूत मण्डल से भास्कर वर्मा ने एक ताओ पाण्डुलिपि के लिए अनुरोध किया था। जिसका संस्कृत अनुवाद उसके लिये उपलब्ध किया गया था।[7]

हर्ष का तीसरा दूतमण्डल बोधिवृक्ष की शाखाएं उपहार स्वरूप ले गया था। बौद्ध धर्म के अन्य अवशेष तथा बहुमूल्य ग्रन्थ भी इन यात्रियों के साथ चीन गये। हिन्दू, बौद्ध तथा अन्य सम्प्रदायों के भारतीय व चीनी विद्वानों और दूसरे दक्ष जन भी इन दूत मण्डलों में सम्मलित हुऐ। इसके अतिरिक्त अपने उद्यम से विदेश जाने की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को इन दूत मण्डलों की सुरक्षा और सुविधाओं में शामिल किया गया। वांग शुआन–त्जे ने संस्कृत और बौद्ध धर्म के विद्वान शुआन–चाओ को चीन वापस लौटने में सहायता प्रदान की थी। वांग शुआन–त्जे अपने दूतमण्डल के साथ स्वयं एक दूसरे मार्ग से लौटा था। साथ में अ–लो–ना–शुन के साथ ना–लो–मी–सी–पा–हो नामक एक विद्वान भी था जो अनेक कलाओं और जादू में दक्ष था तथा दीर्घ जीवन के रहस्य जानता था। ताई–त्सुंग ने उसे प्रसन्नतापूर्वक संरक्षण दिया।[8]

वेई चेंग द्वारा 610 ई0 में लिखित सुई राजवंश के दरबारी इतिहास (581–628 ई0) की सन्दर्भ सूची में ज्योतिष, गणित और चिकित्सा पर ऐसी अनेक पुस्तकें उल्लिखित मिलती है जिनके शीर्षक का आरम्भ पो–लो–मन अर्थात् ब्राह्मण से होता है। यह उनके भारतीय मूल का परिचायक है। तांग काल में इस प्रकार की सामाग्री का आदान–प्रदान सरकारी और गैर सरकारी दोनों तरह से जारी रहा। ली–ई–प्याओं के दूतमण्डल को एक विशेष आदेश दिया गया था।[9] शक्कर बनाने

की भारतीय विधि सीखना। ई–चिंग ने जो 12 वर्ष (673–85 ई0) तक भारत में रहा था, अपनी यात्रा विवरण में चिकित्सा शास्त्र पर तीन अध्याय संकलित किया। शुआन–चाओं नामक विद्वान, जो वांग शुआन–त्जे की सहायता से चीन वापस गया था, 644 ई0 में सरकारी आदेश से पुनः भारत आया। उसे आदेश दिया गया था कि वह जड़ी–बूटियाँ एकत्र करे और प्रसिद्ध चिकित्सकों से सम्पर्क स्थापित करे।[10]

जिन चीनी विद्वानों की कृतियों को भारतीयों ने प्रभावित किया उसमें एक प्रमुख नाम बौद्ध तांत्रिक भिक्षु ई–शिंग का है। कुछ प्रसिद्ध भारतीय नामों में जो चीनी रूप मिलते है। उनमें एक चिया–येह शियाओं–बेई का है जिसने 650 ई0 के कुछ ही समय बाद पंचाग में सुधार किया। दूसरा विद्वान छयु–तान–शिता का है जो ज्योतिष विभाग का अध्यक्ष बना। उसने ज्योतिष और गणित पर प्रसिद्ध ग्रन्थ 'काई–युआन–चान–चिंग की रचना की जिसमें त्रिकोणमिति, शून्यांक तथा अन्य नए विषयों का प्रतिपादन किया गया था। इस प्रकार चीन को भारतीय व्याकरण, भाषा विज्ञान स्थापत्य, शिल्प, चित्रकला और संगीत के अध्ययन की प्रेरणा मिली तथा अनेक क्षेत्रों में भारत ने भी चीनी प्रभाव को ग्रहण किया।[11]

हर्ष : नेपाल के साथ सम्बन्ध :– चीनी यात्री ने अपने यात्रा विवरण में नेपाल का उल्लेख किया है। उसके अनुसार ''नेपाल के राजा लिच्छवि थे और ख्याति लब्ध विद्वान एवं बौद्धमतावलम्बी थे।'' आसन्नभूत काल के एक राजा ने जिसका नाम अंशु वर्मा था। शब्द विद्या पर एक ग्रन्थ की रचना की थी।[12] कुछ विद्वान जैसे फ्लीट, स्मिथ आदि का मत है कि नेपाल हर्ष के अधीन राज्य था लेकिन हम उन साक्ष्यों पर विचार करेगें जो नेपाल पर हर्ष की विजय का अनुमोदन करते है।

नेपाल के राजा अंशुवर्मा के लेख में सम्वत् 34, 39 तथा 45 मिले है जिनमें उसे सामन्त या महासामान्त की उपाधि प्रदान की गयी है और चूँकि एक सामन्त राजा को सम्वत् चलाने का अधिकार नहीं होता है अतः उक्त तीनों सम्वत् अंशुवर्मा द्वारा प्रचलित नहीं है। 637 ई0 के आस–पास अपनी नेपाल यात्रा में चीनी यात्री ने अंशुवर्मा को आसन्नभूतकाल का राजा बताया है। अतः हर्ष के साथ उसकी समसामयिकता के कारण इन सम्वतों को हर्ष सम्वत् माना गया है।
क्योंकि यही सम्वत् उस समय अधिक प्रचलित था और दूसरा कोई ज्ञात भारतीय सम्वत् स्थिति की आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं करता। अतः यह प्रमाणिक होता है कि नेपाल राज्य कन्नौज के अधीन था।

नेपाल की वंशावली के अनुसार अंशु वर्मा के गद्दी पर बैठने के कुछ वर्ष पूर्व सम्राट विक्रमादित्य नेपाल आया था और उसने वहाँ अपने सम्वत् का प्रचलन किया था। इस घटना को नेपाल पर हर्ष की विजय की स्मृति के रूप में माना गया है क्योंकि इस काल में विक्रमादित्य का उल्लेख भारतीय राजाओं में एक मात्र हर्ष से ही सम्बन्ध रखता है। वंशावली के अनुसार इससे भी अधिक सबल साक्ष्य नेपाल में वैश्य राजपूतों का पाया जाना है क्योंकि परम्परा के अनुसार भारतीय राजा किसी देश की विजय के पश्चात् उसकी कुछ भूमि अपने कुल के लोगों में बांट दिया करता था। चीनी यात्री ने हर्ष को वैश्य जाति का बतलाया है, उसने यहाँ पर फी–शे का अर्थ वैश्य जाति से लिया है और कंनिघम ने फी–शे की एक रूपता वैश्य राजपूतों से स्थापित की है। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि नेपाल पर वैश्य राजा का शासन था जो कन्नौज–नरेश हर्ष के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हो सकता।[13] अत्र परमेश्वरेण तुषारशैलभुवो दुर्गा या ग्रहीत करः अर्थात् हर्ष ने हिमाच्छादित प्रदेश से कर ग्रहण किया, हर्षचरित के इस प्रसिद्ध पद से भी नेपाल पर हर्ष की विजय का साक्ष्य प्रस्तुत होता है।

हर्ष : ईरान के साथ सम्बन्ध :– गुप्तोत्तर काल में भारत और ईरान के मध्य घनिष्ठ राजनीतिक सम्बन्ध थे। शुआन–च्वांग के अनुसार भारत के पश्चिम में समुद्र से सटे हुए प्रदेश लांग–क्ये–लो में जो ईरान के अधिकार में था, बौद्ध धर्म फलती–फूलती अवस्था में था। इसके निवासियों की भाषा और लिपि भारतीय भाषाओं और लिपियों से मिलती जुलती थी। वहाँ एक सौ से ज्यादा संघाराम 6,000 से अधिक भिक्षु कई सौ देव मन्दिर तथा बहुत से पशुपत थे। चीनी यात्री बताता है कि स्वयं ईरान में देव मन्दिर बहुतायत से पाये जाते थे और वहाँ दो–तीन बौद्ध बिहार तथा कई सौ भिक्षु भी थे।[14] ईरान नरेश के महल में बुद्ध का एक भिक्षा पात्र रखा था। इस प्रसंग से यह भी स्मरणीय है कि सर्वप्रथम एक पार्थिया राजकुमार आन–शिकाओं ने ही बौद्ध त्रिपिटक को चीनी भाषा में अनुदित करने का संगठित प्रयास किया था। अल्बरुनी ने भी अपने से प्राचीनतर काल में ईरान, ईराक तथा

खुरासान में बौद्ध धर्म के अस्तित्व की चर्चा की है। धर्म के समान आर्थिक क्षेत्र में भी दोनों देशों में घनिष्ठ सम्बन्ध थे। ईरान से चीन आने–जाने वाले व्यापारी जलपोत भारतीय बन्दरगाहों पर ठहरते थे। ई–चिंग भी एक ईरानी जलपोत से ही भारत आया था।

ईरानी और अरब इतिहासकार फारस की खाड़ी में भारतीय जलपोतों के आने की चर्चा प्रायः करते है। पंचतन्त्र नामक भारतीय ग्रन्थ, शंतरज तथा भारतीय आयुर्वेद की ईरान में लोकप्रियता इस प्रसंग में स्मरणीय है।[15] भारत–ईरान के इन सांस्कृतिक सम्बन्धों का हर्ष के काल में राजनीतिक पक्ष था या नहीं। इस सन्दर्भ में सबसे महत्वपूर्ण साक्ष्य ईरानी इतिहासकार तबरी से मिलती है कि खुसरो द्वितीय के पास भारत के राजा प्रमेश ने 626 ई0 में एक दूतमण्डल भेजा था जो अपने स्वामी की ओर से एक पत्र तथा खुसरो और उसके पुत्रों के लिए भेट लाया था।[16] नोल्डेके ने प्रेमेश को 'पुलिकेशी' नाम का रूपान्तर मानकर इसकी पहचान चालुक्य राजा पुलिकेशिन द्वितीय के रूप में की है।[17] उनके इस मत के आधार पर अजन्ता की गुफा नं0 1 के कुछ चित्रों की व्याख्या की गयी। फार्ग्युसन ने इन चित्रों का विवरण इस प्रकार दिया है कि एक मोटे से विदेशी को एक स्त्री के साथ गद्दे पर बैठे और दाहिने हाथ में चषक लिये दिखाया गया है। इसके अतिरिक्त इस गुहा की दीवार पर एक बड़ा रोचक चित्र बना है जिसमें एक भारतीय राजा सिंहासन पर बैठा हुआ है और किसी विदेशी दूतमण्डल का स्वागत कर रहा है। ये विदेशी एक पत्र प्रस्तुत करते और प्रतिदान में भेट पाते हुए दिखाये गये है।[18]

फर्ग्युसन के अनुसार ये विदेशी ईरानी है और ये चित्र 630–40 ई0 के बीच के है। उनके इस निष्कर्ष को नोल्डके के द्वारा तबरी के साक्ष्य की व्याख्या के प्रकाश में देखने पर यह मानना अनिवार्य हो जाता है कि दीवार वाले चित्र में ईरानी दूत मण्डल खुसरो द्वितीय की तरफ से पुलकेशिन को पत्र प्रस्तुत कर रहा है और स्वयं खुसरो का उनकी रानी के साथ अंकन छत के चित्रों में किया गया है। उस अवस्था में यह भी माना जा सकता है कि खुसरो ने यह दूत मण्डल उस भारतीय दूतमण्डल के उत्तर में भेजा होगा जिसका उल्लेख तबरी ने किया है। परन्तु एटिग्घौसन तथा मजूमदार[19] ने ध्यान दिलाया कि इस मत को स्वीकार करना कठिन है–

- प्रेमेश नाम का भारतीय रूपान्तर परमेश्वर ज्यादा प्रमाणिक है। यह पुलकेशिन की भी उपाधि थी और हर्ष की भी तथा अन्य अनेक भारतीय राजाओं की भी।
- गुफा नं0 1 के चित्र पुलकेशिन द्वितीय के समय के ही है, यह निश्चित नहीं है। याजदानी ने उन्हें पाँचवी शती का माना है।
- दूतमण्डल वाले चित्रों में ईरानियों का ही चित्रण हुआ है यह भी निश्चित नहीं है। मोतीचन्द और धवलिकर[20] उन्हें सीरियायी व्यापारी बताते है तथा याजदानी तुरुण्क।

छत वाले चित्रों में भी खुसरों और उसकी रानी का अंकन है, इसे फूशे, धवलिकर और अन्य कई विद्वान नहीं मानते। धवलिकर ने यहाँ किसी ईरानी सरदार और उसकी रानी का अंकन माना है। लेकिन इन चित्रों का खुसरों से सम्बन्ध अस्वीकृत कर देने से तबरी के साक्ष्य की समस्या बनी रहती है। कनिंघम के अनुसार यह वासुदेव नाम का एक भारतीय सासानी राजा था। जिसका अस्तित्व सिक्कों से ज्ञात होता है।[21] लेकिन आर0सी0 मजूमदार का यह मत ज्यादा सही लगता है कि खुसरो के बाद दूतमण्डल भेजने वाला भारतीय राजा हर्ष था।[22] हर्ष की एक उपाधि 'परमेश्वर' थी। उसका सिन्ध पर धावा यह प्रमाणिक करता है कि उसकी गतिविधियाँ उत्तर–पश्चिम दिशा में ईरान तक थी। तारानाथ के अनुसार हर्ष ने मूलस्थान (मुल्तान) में म्लेच्छों को प्रताड़ित किया था।[23] ये म्लेच्छ ईरानी रहे होंगे। बाण ने एक जगह के युद्धोत्मक वीरों से कहलाया है कि उत्साही जनों के लियें तुरुण्कों का देश हाथ भर है और पारसिकों का देश बित्ता भर।[24]

कादम्बरी में बाणभट्ट उल्लेख करते है कि पारसिक देश के राजा ने इस ग्रन्थ के नायक के लिये इन्द्रायुध नामक अश्व भेजा था।[25] तारानाथ ने ईरान के राजा द्वारा मध्य देश के राजा (हर्ष) के पास घोड़े भेजे जाने का उल्लेख किया है। बाणभट्ट के अनुसार हर्ष की सेना के लिये ईरान से भी घोड़े आते थे।[26] इन तथ्यों के प्रकाश में यह प्रमाणिक होता है कि भारतीय राजा 'प्रेमेश' जिसने खुसरो के पास दूतमण्डल भेजा था, वह हर्ष ही था।[27]

हर्ष : तिब्बत के साथ सम्बन्ध :– चेन क्वान के बाईसवे वर्ष में (648 ई0), यू–वेई शुआन फू–चांगशी पदधारी वांग शुआन–त्जे को शी–युई (पश्चिमी देशो) में दूत बनाकर भेजा गया, किन्तु

उस पर चुंग–तियेन–चु (मध्य भारत) ने घात लगाकर हमला किया। नेगत्सन ने शुआन त्जे के साथ चुने हुए सैनिक भेजे। उस शुआन–त्जे ने उन्हे पराजित किया और बन्दियों को (चीनी सम्राट के समक्ष) प्रस्तुत करने के लिए आया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. देवहूति डी0 हर्ष : ए पोलिटिकल स्टडी पृ0 257 OUP India तीसरा संस्करण, 1999
2. ताकाकुसु द्वारा अनुदित ई–चिंग का भारत–विवरण, पृ0 136 लंदन, Clarendon प्रेस, 1896
3. क्ला0ए0, पृ0 120
4. कर्निघम ; एन्श्येण्ट ज्योग्रेफी ऑव इण्डिया, पृ0 646
5. कर्निघम ; एन्श्येण्ट ज्योग्रेफी ऑव इण्डिया, पृ0 648
6. देवहूति, डी0, हर्ष : ए पोलिटिकल स्टडी, पृ0 249
7. देवहूति, डी0, हर्ष : ए पोलिटिकल स्टडी, पृ0 254
8. देवहूति, डी0, हर्ष : ए पोलिटिकल स्टडी, पृ0 254
9. देवहूति, डी0, हर्ष : ए पोलिटिकल स्टडी, पृ0 255
10. देवहूति, डी0, हर्ष : ए पोलिटिकल स्टडी, पृ0 255
11. देवहूति, डी0, हर्ष : ए पोलिटिकल स्टडी, पृ0 256
12. वटिस, जि0 2, पृ0 84
13. त्रिपाठी, हिस्ट्री ऑफ कन्नौज, पृ0 93, रमा शंकर त्रिपाठी मोती लाल बनारसीदास प्रकाशन, 1989
14. देवहूति, डी0, हर्ष : ए पोलिटिकल स्टडी, ओ0पू0पी0 इण्डिया प्रकाशन, तीसरा संस्करण 1999, पृ0 278
15. क्ला0ए0, पृ0 638–40, विष्टरनिट्स, हि0इ0लि0 3, पृ0 254 अ0मरे, एच0जे0 आर0 ए हिस्ट्री ऑव चेस, 1939
16. द क्लासिकल एज, भारतीय विद्या भवन, लेखक आर0सी0 मजुमदार, पृ0 153
17. जे0आर0ए0एस0 1879, पृ0 166
18. जे0आर0ए0एस0 1879, पृ0 155
19. मजुमदार, आर0सी0, जे0आई0एच0 1928
20. फॉरेनर्स इन एन्श्येण्ट इण्डिया एण्ड लक्ष्मी एण्ड सरस्वती इन आर्ट एण्ड लिट्रेचर, सं0डी0सी0 सरकार, कलकत्ता 1970, पृ0 14
21. लेटर इण्डो– स्कीथिपन्स, पृ0 123
22. मजुमदार, आर0सी0; जे0आई0एच0 4, 1929
23. तारानाथ; हिस्ट्री ऑव बुद्धिज्म, शीफ्नर का अनुवाद, पृ0 94
24. हर्षचरित, पृ0 380
25. कादम्बरी, रामतेज शास्त्री का संस्करण, पृ0 164–65
26. हर्षचरित, पृ0 106–107
27. शंकर गोपल; हर्ष एण्ड ईरान/डी0के0 प्रकाशन 2003